बायोडीजल तैयार करने की उन्नत तकनीक विकसित

- यूपीईएस के शोधकर्ताओं ने रूस के विशेषज्ञों के सहयोग से हासिल की सफलता
- बायोडीजल उत्पादन के लिए जटरोफा (रतनजोत) है प्रमुख अखाद्य तिलहन

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

यूपीईएस के तीन शोधकर्ताओं ने रूस के बायोएनर्जी एक्सपर्ट्स के साथ मिलकर जटरोफा (रजनजोत) के पौधे से बायोडीजल तैयार करने की उन्नत तकनीक विकसित की है। दुनिया में बढ़ रहे ईंधन संकट के मद्देनजर बेहतर समाधान तलाशने के मकसद से शोध में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) व मशीन लर्निंग की मदद ली गई है, जो कि श्रम संबंधी खर्चों को घटाने के साथ-साथ बायोईंधन की क्वालिटी भी बेहतर बनाएगी।

यूपीईएस के स्कूल आफ कम्प्यूटर साइंस के अभिरूप खन्ना, स्कूल आफ एडवांस्ड इंजीनियरिंग की डा.सपना जैन व डा.भावना लांबा ने मिलकर ऐसी विधि विकसित की है जो एआई व मशीन लर्निंग एल्गारिदम की मदद से बायोडीजल की प्रापर्टीज का पूर्वानुमान लगाकर बायोडीजल की उपज व क्वालिटी में सुधार ला सकती है।

बायोडीजल तैयार करने की तकनीक विकसित करने वाले शोधार्थी।

यूपीईएस और डॉन स्टेट टैक्निकल यूनीवर्सिटी एवं फेडरल साइंटिफिक एग्रोइंजीनियरिंग सेंटर वीआईएम (रूस) जैसे ग्लोबल संस्थानों द्वारा सस्टेनेबल एनर्जी सल्यूशंस की तलाश के लिए इस उल्लेखनीय अंतर्विषयक शोध कार्य को व्यापक मान्यता मिली है, क्योंकि बायोडीजल उत्पादन के लिए जटरोफा (रतनजोत) प्रमुख अखाद्य तिलहन है।

शोध के अंतर्गत ईंधन की क्वालिटी पर जोर दिया गया, जिसने ईंधन की मात्रा का पूर्वानुमान करने के साथ-साथ श्रम लागत घटाने में भी सहायता दी। यूपीईएस लगातार ऐसे इनोवेटिव सल्यूशंस की तलाश में प्रयत्नशील है,जिससे स्थानीय समुदायों को फायदा मिलने के साथ ही वैश्विक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़े। इससे जाहिर होता है कि यूपीईस की फैकल्टी सस्टेनेबिलिटी, इनोवेशन और रिसर्च के लिए दृढ़ प्रतिबद्ध है।

विदित हो कि पिछले दिनों नई दिल्ली में आयोजित जी-20 सम्मेलन के दौरान भारत के नेतृत्व ने ग्लोबल बायोफ्यूएल्स एलायंस (जीबीए) नाम से एक समूह का गठन किया था। समूह का मिशन विभिन्न देशों को एकजुट कर सस्टेनेबल विकल्पों को बढ़ावा देना और बायो ईंधन के प्रयोग को प्रोत्साहित करना है।